मैं माखन नहीं खायो मेरी मैया .....

मैं माखन नहीं खायो मेरी मैया,
मैं माखन नहीं खायो री ।।टेर।।

भोर भये गैय्यन के पीछे, मधुबन मोही पठायो री।
चार पहर वंशी वट भटक्यो, साँझ पड़े घर आयो री।।
मैं माखन नहीं ....

मैं बालक बहियन को छोटो, छींको किस विध पायोरी।
ग्वाल बाल सब बैर परत है, बरबस मुख लिपटायो री।।
मैं माखन नहीं....

तू जननी मति की अतिभोरी, इनके कहे मति आयो री।
तेरे जिय कछु भेद परत है, जाण्यो परायो जायोरी।।
मैं माखन नहीं ....

यह ले तेरी लकुटि कमरिया, तें मोहि नाच नचायो री।
सूरदास जब हँसी जसोदा, ले निज कंठ लगायो रे।।
मैं माखन नहीं ....

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय।।